अलोकिक गीतांजलि - 5

☐ शिव पिता को अब याद करो

शिव पिता को अब याद करो, मुक्तिधाम तुम्हें जाना है

अपने सुकर्मों के बल पर ही, सतयुग में अब तुम्हें आना है

शिव पिता को अब याद करो.....

ये संगम का स्वर्णिम युग है, शिव पिता फिर से आया है

ब्रह्मा-मुख से शिव बाबा ने, वही गीता ज्ञान सुनाया है

कलियुग का अन्त अब आया है, विकराल विनाश खड़ा आगे

है अन्त समय अब हम सबका, शिव पिता ने बतलाया है

शिव पिता को अब याद करो.....

पाण्डव शिव शक्ति सेना की, रणभेरी अब फिर बजती है

शिव बाबा के ज्ञान से फिर माया को मार भगाना है

शिव पिता को अब याद करो, सतयुग में तुमको आना है

शिव पिता को अब याद करो.....

➢➢ शिव पिता को अब याद करो

➳ _ ➳ अलग अलग विधि से याद करो

→ याद की / योग की युक्तियाँ निकालो

→ ज्ञान के बहुत से राज़ योग की अशरीरी अवस्था में ही प्रगट होंगे... जो कहीं पर भी लिखे नहीं होंगे...

→ योग केवल विकर्म विनाश करने के लिए नहीं है

- योग आनंद है
- योग ख़ुशी है
- योग मौज है

➢➢ मुक्तिधाम तुम्हें जाना है

➳ _ ➳ मुक्तिधाम हमें जाना है क्योंकि

→ यह दुनिया अब रहने लायक नहीं रही

→ हमें घर की याद आ रही है (SPIRITUAL HOME SICKNESS)

→ क्योंकि उसी के द्वारा विष्णु पूरी में जाना है

➢➢ अपने सुकर्मों के बल पर ही, सतयुग में अब तुम्हें आना है

➳ _ ➳ सेवा में बल है

➳ _ ➳ पुन्य में बल है

→ जिसके जितने ज्यादा पुण्य ... वह उतना आगे...

→ हमारे पुन्य ही हमारी स्थिति को ऊंचा उठाते हैं

→ दुआएं हमें निर्विघन बनाती हैं

➢➢ ये संगम का स्वर्णिम युग है, शिव पिता फिर से आया है

➳ _ ➳ मनन करो

→ "फिर से" क्या क्या हो रहा है

➢➢ ब्रह्मा-मुख से शिव बाबा ने, वही गीता ज्ञान सुनाया है

➢➢ कलियुग का अन्त अब आया है

➢➢ विकराल विनाश खड़ा आगे

➳ _ ➳ अब सोने का समय नहीं

➢➢ है अन्त समय अब हम सबका, शिव पिता ने बतलाया है

➳ _ ➳ रोजाना मुरली के पश्चात खुद से पूछे की... आज बाबा ने

→ क्या क्या नयी बातें बताई ?

→ विशेष रूप से ... व्यक्तिगत रूप से ... मेरे लिए कही ?

➳ _ ➳ विचारों को विचारों से परिवर्तित करना है

➢➢ पाण्डव शिव शक्ति सेना की, रणभेरी अब फिर बजती है

➳ _ ➳ युद्ध की घोषणा हो चुकी है

➢➢ शिव बाबा के ज्ञान से फिर माया को मार भगाना है

➳ _ ➳ अंश मात्र भी विकार न रहें